

## नौकरी की किताब

### सत्र 28: दुख का धर्मशास्त्र और नौकरी की पुस्तक

### जॉन वाल्टन द्वारा

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, पीड़ा और नौकरी की किताब है।

#### परिचय [00:22-1:03]

अब हम अपना ध्यान अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र की ओर लगा सकते हैं। यहां तक कि जब हम ऐसा करते हैं, तो याद रखें कि हमने नोट किया है कि पुस्तक वास्तव में हमें पीड़ा के उत्तर जानने में मदद करने के लिए नहीं बनाई गई है और न ही वास्तव में हमें एक मॉडल देने के लिए बनाई गई है कि पीड़ा कैसी दिखनी चाहिए, और हमें इस पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। . इसका उद्देश्य केवल हमें पीड़ा के समय ईश्वर के बारे में उचित रूप से सोचने में मदद करना है। लेकिन फिर भी, हम अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों को रेखांकित कर सकते हैं।

#### दुख के स्तर और प्रकार [1:03-2:19]

जब हम पीड़ा के बारे में बात करते हैं, तो निस्संदेह, हम कई अलग-अलग स्तरों के बारे में बात कर सकते हैं। हम दीर्घकालिक या दुर्बल कर देने वाले दर्द या चोट के साथ शारीरिक पीड़ा के बारे में बात कर सकते हैं। हम मनोवैज्ञानिक पीड़ा के बारे में बात कर सकते हैं: दुःख, शर्म, चिंता, अपमानजनक या टूटे हुए रिश्ते। हम परिस्थितिजन्य पीड़ा, खान-पान संबंधी विकार के साथ रहना, एचआईवी या तंत्रिका संबंधी बीमारी के बारे में बात कर सकते हैं। हम सरोगेट पीड़ा के बारे में भी बात कर सकते हैं क्योंकि हम वृद्धों या असाध्य रूप से बीमार लोगों की देखभाल करते हैं, पीड़ा इसलिए क्योंकि जो हमारे निकट हैं वे पीड़ित हैं। अंत में, हम प्रणालीगत पीड़ा के बारे में सोच सकते हैं क्योंकि हम उन लोगों पर विचार करते हैं जिन्हें दमनकारी शासन से खतरा है, मानव तस्करी, भूख और बीमारी के शिकार हैं। तब हम देखते हैं कि पीड़ा हमारे अनुभव और हमारी दुनिया में

कई, कई अलग-अलग स्तरों पर मौजूद है। दुख हमें तोड़ सकता है, और यह उस टूटी हुई दुनिया की विशेषता है जिसमें हम रहते हैं।

### **पीड़ा से प्रश्न उठते हैं [2:19-4:32]**

इसलिए, पीड़ा का कोई भी धर्मशास्त्र यह पूछता है कि हम पीड़ा के संबंध में ईश्वर के बारे में कैसे सोचते हैं। पीड़ा के धर्मशास्त्र को यही करना चाहिए। तो, हम इस तरह के मुद्दों पर विचार कर सकते हैं: भगवान ने ऐसी दुनिया क्यों बनाई है जिसमें ऐसी पीड़ा मौजूद हो सकती है ? वह इसे जारी क्यों रहने देता है? मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? क्या भगवान मुझे कुछ सिखाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या मैंने कुछ गलत किया? ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनका हमें समाधान करने की आवश्यकता है। मूल रूप से, एक ईश्वर जो सर्वथा अच्छा और सर्वशक्तिमान है तथा जिसमें न्याय और करुणा है, वह ऐसी दुनिया बनाने की अनुमति देना तो दूर की बात है, जिसमें पीड़ा इतनी व्यापक है?

अब, निःसंदेह, संशयवादियों के पास इसे देखने के अपने तरीके हैं। वे कहते हैं कि हम अपर्याप्त ईश्वर के लिए सिर्फ बहाना बना रहे हैं, कि या तो कोई ईश्वर नहीं है या ऐसा ईश्वर जो ऐसी चीजों की अनुमति देगा वह हमारी पूजा के योग्य नहीं है।

यदि हम ईश्वर को सही ठहराने के प्रयास करते हैं, तो हमें इस धारणा के तहत काम करना होगा कि उसे कुछ बाहरी मानदंडों के अनुरूप होना होगा, जो कि वह नहीं करता है, और हम यह निर्धारित करने के लिए न्यायाधीश की बेंच पर बैठ सकते हैं कि क्या वह हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने में सफल रहा है। हम न तो भगवान से अपने लिए हिसाब मांगते हैं और न ही यह पूछते हैं कि हमारा जीवन, या दुनिया वैसी क्यों है जैसी वे हैं। इससे उत्पन्न होने वाली पीड़ा का कोई धर्मशास्त्र नहीं है। हम अंततः यह जानना चाहते हैं कि अय्यूब की पुस्तक हमें यह सीखने में मदद कर सकती है कि पीड़ा के आलोक में ईश्वर के बारे में कैसे सोचा जाए, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सार्वभौमिक। तो, आइए इसे पांच दृष्टिकोणों के संबंध में देखें।

### **दुख पर पाँच परिप्रेक्ष्य:**

1) **दुख समस्त मानव जाति के लिए सार्वभौमिक है [4:32-5:07]**

नंबर एक, पीड़ा सारी मानवता की नियति है। यदि आप अभी पीड़ित नहीं हैं, तो संभावना यह है कि अंततः आप पीड़ित होंगे। दुख सारी मानवता की नियति है। और उस अर्थ में, यह एक व्यक्ति को यहां कष्ट सहने के लिए और एक व्यक्ति को वहां कष्ट भोगने के लिए चुनना नहीं है। यह वही है जो हम सभी कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत रूप से अनुभव करते हैं, कुछ अधिक, कुछ कम स्पष्ट।

## 2) पीड़ा सृजन की प्रक्रिया की एक आकस्मिकता है [5:07-7:54]

नंबर दो, पीड़ा सृजन प्रक्रिया की एक आकस्मिकता है। हम अभी तक पूर्ण सुव्यवस्थित दुनिया में नहीं रह रहे हैं, और नई सृष्टि तक हम ऐसा नहीं करेंगे। तब पीड़ित होना अपेक्षित आकस्मिकताओं में से एक है क्योंकि व्यवस्था अभी तक पूरी तरह से प्राप्त नहीं हुई है। दुःख के लिए अव्यवस्थित एवं अव्यवस्था दोनों ही उत्तरदायी हैं। भगवान का डिज़ाइन हमें तंत्रिका तंत्र के साथ बनाना था जो हमें दर्द के रूप में अनुभव होने वाले संभावित नुकसान की चेतावनी देता है। इसी तरह भगवान ने हमें बनाया है। यदि हमारा तंत्रिका तंत्र विफल हो जाता है, तो हमें बड़ी समस्याएँ होती हैं। भगवान ने हमें भावनाओं के साथ बनाया है, और अपनी भावनाओं के माध्यम से, हम आहत भावनाओं का अनुभव कर सकते हैं। यदि हम शारीरिक या भावनात्मक रूप से कुछ भी महसूस नहीं कर सकते तो हमें चोट नहीं पहुँच सकती। क्या हमने सोचा कि यह अच्छी बात है कि भगवान ने हमें तंत्रिका तंत्र और भावनाओं के साथ बनाया है? चूँकि हम प्यार करने में सक्षम हैं, हम दर्द के प्रति संवेदनशील हैं क्योंकि प्यार अक्सर इस जीवन में दर्द का कारण बनता है। इस संसार में, इस प्रकार के शरीरों के साथ, कष्ट अपरिहार्य है। हमें इसे अपनी अपेक्षाओं में शामिल करना होगा। सामान्य को कष्ट-मुक्त जीवन के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह सामान्य नहीं है। सृजन की प्रक्रिया में वास्तविकताओं को देखते हुए सामान्य को फिर से परिभाषित करना होगा। यदि हम दुख की आशा करते हैं, तो जब हम इसका अनुभव करेंगे तो यह असामान्य नहीं लगेगा। इससे दुख सहना आसान नहीं होता है, लेकिन यह इसके बारे में हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है। हमें पीड़ा के लिए अकेला नहीं छोड़ा गया है। एक मानव जाति के रूप में, हम यही अनुभव करते हैं।

## 3) दुख आंतरिक रूप से पाप से जुड़ा नहीं है [7:54-11:26]

तीसरा, दुख को आंतरिक रूप से पाप से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। पीड़ा, कभी-कभी, अव्यवस्था का परिणाम हो सकती है। पाप कोई करता है और उसका फल कोई और भुगतता है, परंतु इसका अनुभव अव्यवस्थित अपूर्ण रचना के परिणाम स्वरूप भी हो सकता है। कुछ पीड़ाएँ निर्विवाद रूप से पाप का प्रत्यक्ष प्राकृतिक परिणाम हैं। निःसंदेह। ईश्वर कष्ट को पाप की सजा के रूप में उपयोग कर सकता है, लेकिन हम कभी यह नहीं मान सकते कि हमारा या किसी और का कष्ट ईश्वर द्वारा दंड का कार्य है। पवित्रशास्त्र में केवल भविष्यसूचक आवाज़ें ही पहचान सकती थीं कि परमेश्वर की सज़ा क्या थी और क्या नहीं। हमारे पास ऐसी कोई भविष्यसूचक आवाज़ नहीं है। हम अच्छी तरह से विश्वास कर सकते हैं कि हम वही काटेंगे जो हमने बोया है गलातियों 6:7, लेकिन यह हमें व्यवहार और परिस्थितियों के बीच एक-से-एक पत्राचार करने की अनुमति नहीं देता है। हालाँकि, पीड़ा हमें अपने जीवन का मूल्यांकन करने, यह निर्धारित करने के लिए प्रेरित कर सकती है कि हम सही रास्ते पर हैं या नहीं। ईश्वर की बुद्धि पर भरोसा करना बाइबल की सबसे मजबूत सलाह है। यह पर्याप्त होना चाहिए।

ट्रस्ट यह पूछने से बचता है, भगवान ने ऐसा क्यों किया? या उसने ऐसा क्यों होने दिया? यह हमें उस क्षेत्र में ले जाता है जहाँ हमें मार्गदर्शन देने के लिए कोई नौवहन उपकरण मौजूद नहीं है। ईश्वर न तो हर परिस्थिति का सूक्ष्म प्रबंधन कर रहा है और न ही आपके या मेरे जीवन में होने वाली हर चीज़ पर हस्ताक्षर कर रहा है। फिर भी यह सोचना विपरीत दिशा में एक गलती होगी कि वह दूर है और अलग हो गया है।

मुझे "अनुमति" और "परमिट" जैसे शब्दों का उपयोग करने पर भी आश्चर्य होता है। मुझे नहीं लगता कि हमें इनका इस्तेमाल ईश्वर पर दोष मढ़ने के लिए करना चाहिए। ये कुछ ऐसे एकमात्र शब्द हैं जिनसे हम उसे कुछ हद तक हटा सकते हैं, लेकिन यह हमारी भाषा है, और यह ईश्वर को समझाने के लिए अपर्याप्त है।

जॉन पोलकिंगहॉर्न ने बयान दिया है कि "दुनिया की पीड़ा और बुराई ईश्वर की कमजोरी, अनदेखी या उदासीनता के कारण नहीं है, बल्कि वे ईश्वर के अलावा किसी अन्य रचना की अपरिहार्य लागत हैं।" "किसी रचना की अपरिहार्य लागत को ईश्वर के अलावा अन्य होने की अनुमति दी जाती है।"

#### 4) विश्वास को गहरा करने के अवसर के रूप में कष्ट उठाना [11:26-14:18]

नंबर चार, पीड़ा के धर्मशास्त्र में, ऐसे दृष्टिकोण जिन्हें हम अपना सकते हैं। हम यह पहचान सकते हैं कि कभी-कभी पीड़ा हमारे विश्वास को गहरा करने का अवसर प्रदान कर सकती है। हममें से किसी ने भी अपने जीवन में चाहे जितनी भी पीड़ा का अनुभव किया हो, उस पीड़ा ने हमें वह बनाने में योगदान दिया है जो हम हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। मैं आपको रोमियों 5:3 की ओर इंगित करूंगा।

हम बाइबिल की शिक्षा के आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ईश्वर चाहता है कि हर कोई स्वस्थ और खुश रहे। इसलिए, हमें अपनी स्थिति के समाधान के लिए केवल विश्वास के साथ प्रार्थना करने की आवश्यकता है। हो सकता है कि भगवान ऐसा करना न चाहें। हम अपने और दूसरों के लिए उपचार के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। हमें विश्वास होना चाहिए कि यदि ईश्वर चाहे तो वह ठीक कर सकता है, लेकिन हम उससे माँग करने की स्थिति में नहीं हैं। जब परमेश्वर अपने लोगों इसराइल को जल के माध्यम से लाने की बात करता है, तो हमें यह समझना होगा कि यह संकटपूर्ण जल से बचने में उनकी मदद करने से अलग है। वह मुसीबत के समय में उनसे मिलने जा रहा है। शायद हमारे लिए यह प्रार्थना करना अधिक महत्वपूर्ण है कि ईश्वर हमें कष्ट सहने के लिए और परीक्षण या संकट के समय में उसे दूर करने के बजाय उसके प्रति वफादार रहने के लिए मजबूत करे।

यह महत्वपूर्ण है कि हम ईश्वर में निराशा के साथ प्रतिक्रिया न करें। ईश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने में चूक नहीं करता या चूक नहीं करता। यदि हमें ऐसा लगता है कि वह हमारी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा है, तो समस्या उसमें नहीं है। हमें अपनी अपेक्षाओं की दोबारा जांच करनी चाहिए। जब जीवन अपने सबसे निचले स्तर पर हो तो हमारे लिए ईश्वर का सम्मान करने का प्रयास करना महत्वपूर्ण है। आशा खत्म हो जाने पर भी हमें उस पर भरोसा करने का प्रयास करना चाहिए। ईश्वर हमसे यही अपेक्षा करता है। हम एक ऐसी दुनिया में हैं जहां दुख सहना पड़ता है और हम इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, यह सब मायने रखता है।

#### 5) मसीह की पीड़ा में भाग लेना [14:18-15:01]

अंत में, पाँचवाँ परिप्रेक्ष्य यह है कि जब हम पीड़ित होते हैं, तो हम मसीह की पीड़ा में भाग लेते हैं। मसीह एक अलग रास्ता दिखा रहे थे जो हार के माध्यम से विजय दिलाएगा, जिसकी क्रॉस अनिवार्य रूप से गवाही देता है। हमें सदैव शत्रुओं से मुक्ति की आशा नहीं करनी चाहिए। मैं आपको फिलिप्पियों 3:10 की ओर निर्देशित करूंगा। इसलिए, हम अपने कष्टों का सामना करने का प्रयास कर सकते हैं क्योंकि हम कल्पना करते हैं कि हम मसीह के कष्टों में भाग ले रहे हैं।

### **निष्कर्ष [15:01-15:49]**

इनमें से कोई भी यह सुझाव नहीं देता कि हमें अपने जीवन से दुख समाप्त होने की उम्मीद करनी चाहिए। यह हमारी दुनिया की स्थिति और हमारी मानवीय दुर्दशा है। हमें ईश्वर को दोष देने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि हमारे जीवन में उसकी गवाही देते समय हमारे कष्टों के माध्यम से कौन से उद्देश्य पूरे हो सकते हैं। तो, पुस्तक में थोड़ा सा धर्मशास्त्र है। अब हम अपना ध्यान नौकरी की पुस्तक के संदेश को सारांशित करने की ओर लगाना चाहते हैं, और वह अगले खंड में होगा।

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, पीड़ा और नौकरी की किताब है। [15:49]